विषय सूची

विष	पृष्ठ
१–सम्यक्त्वको नमस्कार	१
२–सम्यक्त्वका माहात्म्य	२
३–आत्मस्वरूपकी यथार्थ समझ सुलभ है।	३
४–द्रव्यदृष्टिकी महिमा	५
५–सम्यक्त्वकी प्रतिज्ञा	६
६–अविरत सम्यग्दृष्टिका परिणमन	१०
७–आत्महिताभिलाषीका प्रथम कर्तव्य	१०
८–श्रावकोंका प्रथम कर्त्तव्य	१५
९–मोक्षका उपाय–भगवती प्रज्ञा	२०
१०–जीवनका कर्तव्य	४१
* तीनलोकमें सम्यग्दर्शनकी श्रेष्ठता	४२
११–कल्याण मूर्ति	४३
१२–धर्मका मूल सम्यग्दर्शन है	४३
* सम्यग्दर्शनरूपी पवित्र भूमि	४५
१३–सम्यग्दर्शन गुण है या पर्याय ?	४६
* सर्व धर्मोंका मूल	५०
१४–हे जीवो ! सम्यक्त्वकी आराधना करो	५१
* मोक्ष और बन्धका कारण	५२
१५–सम्यग्दर्शन प्राप्तिका उपाय	५३
(जय अरिहन्त)	
१६–भेदविज्ञानीका उल्लास	६७
१७–अरे भव्य ! तू तत्त्वका कौतूहली होकर आत्माका अनुभव कर	६८
* सम्यक्त्वकी धानता	१०१

विषय	पृष्ठ
१८–सबमें बड़ेमें बड़ा पाप; सबमें बड़ा पुण्य और सबमें पहले में पहला धर्म	२०२
१९–प्रभू, तेरी प्रभुता !	१०४
* सम्यक्त्व सिद्धि सुखका दाता है	१०४
२०–परम सत्य का हकार और उसका फल	१०५
२१–निःशंकता	१०८
* भवपार होनेका उपाय	१०८
२२–विना धर्मात्मा धर्म नहिं रहता (न धर्मो धार्मिकैर्विना)	१०९
२३–सत्की प्राप्तिके लिये अर्पणता	१११
२४–सम्यग्दृष्टिका अन्तर परिणमन	११४
* "सम्यक्त्व प्रभु है"	११४
२५–जिज्ञासुको धर्म कैसे करना चाहिये ?	११५
२६–एकवार भी जो मिथ्यात्वका त्याग करे तो जरूर मोक्ष पावे	१३६
* अमृत पान करो	१३८
२७–अपूर्व–पुरुषार्थ	१३९
* सम्यक्त्वकी आराधना	१३९
२८ श्रद्धा-ज्ञान और चारित्रकी भिन्न भिन्न अपेक्षायें	१४०
* कौन प्रशंसनीय है	१४२
२९–सम्यग्दर्शन-धर्म	१४३
३०–हे जीवो मिथ्यात्वके महापापको छोड़ो	१४९
३१–दर्शनाचार और चारित्राचार	१५३
३२–कौन सम्यग्दृष्टि हैं ?	१५८
३३–सम्यग्दृष्टिका वर्णन	१५९
३४–मिथ्यादृष्टिका वर्णन	१५९
* परम रत्न	१६०

विषय	पृष्ठ
३५–सम्यग्दर्शनकी रीति	१६१
* सम्यक्त्वकी दुर्लभता	१७७
* आत्मज्ञान से शाश्वत सुख	१७७
३६–स्वभावानुभव करनेकी रीति	१७८
३७–पुनीत सम्यग्दर्शन	१८१
३८–धर्मात्माकी स्वरूप-जागृति	१८४
३९–हे भव्य ! इतना तो अवश्य करना	१८५
४०–१ पाप	१८८
४०–२ ये महापाप कैसे टले ?	१८९
४१–सम्यग्दर्शन बिना सब कुछ किया लेकिन उससे क्या ?	१९०
४२–द्रव्यदृष्टि और पर्यायदृष्टि तथा उसका प्रयोजन	१९७
४३–१ धर्मकी पहली भूमिका भाग १ (मिथ्यात्वका अर्थ)	२००
* बन्ध-मोक्षका कारण	२०८
४३–२ धर्मकी पहली भूमिका भाग २ (मिथ्यात्व)	२०९
* सम्यग्दर्शनकी महानता; सम्यग्दर्शनसे कर्म क्षय; सर्व धर्मका मूल	२२१
४३–३ धर्मकी पहली भूमिका भाग ३	२२२
* सर्व दुःखोंकी परम औषधि	२३९
४४–१ सम्यग्दर्शनका स्वरूप और वह कैसे प्रगटे ?	२४०
४४–२ धर्म साधन	२४७
* सम्यक्त्वी सर्वत्र सुखी	२४८
४५–निश्चयश्रद्धा-ज्ञान कैसे प्रगट हो ?	२४९
४६–सम्यक्त्वकी महिमा–श्रावक क्या करे ?	२५६